

भारतीय शहरी क्षेत्रों में सामाजिक मीडिया का युवा पहचान निर्माण पर प्रभाव

विजय सिंह रौतेला

महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ़ इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी

डॉ राजन मिश्रा

प्रोफेसर, समाज कार्य, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय लखनऊ

सार

सोशल मीडिया के तेजी से विस्तार ने शहरी भारत में युवाओं की पहचान के गठन को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है, जहां उच्च स्मार्टफोन पहुंच और डिजिटल कनेक्टिविटी रोजमर्रा के समाजीकरण को आकार देती है। यह पेपर जांच करता है कि इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म शहरी युवाओं के बीच आत्म-अभिव्यक्ति, सहकर्मी बातचीत और सांस्कृतिक बातचीत के लिए प्रमुख क्षेत्र के रूप में कैसे कार्य करते हैं। हाल के अनुभवजन्य अध्ययनों के आधार पर, विश्लेषण इस बात पर प्रकाश डालता है कि सोशल मीडिया युवाओं को ऑनलाइन व्यक्तित्व चुनने, कई पहचानों के साथ प्रयोग करने और लाइक, टिप्पणियों और शेयरों के माध्यम से मान्यता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। साथ ही, अध्ययन इन डिजिटल स्थानों की द्विपक्षीय प्रकृति को रेखांकित करता है। जबकि सोशल मीडिया रचनात्मकता, नेटवर्किंग और नागरिक जुड़ाव के अवसरों का विस्तार करता है, यह सामाजिक तुलना, प्रदर्शन दबाव और साइबरबुलिंग के जोखिम को भी बढ़ाता है, जो आत्म-सम्मान और मानसिक कल्याण को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। वैश्विक डिजिटल संस्कृति और स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक अपेक्षाओं के चौराहे पर स्थित शहरी युवा, अक्सर ऐसी संकर पहचान विकसित करते हैं जो पारंपरिक मूल्यों को महत्वाकांक्षी आधुनिक जीवन शैली के साथ मिश्रित करती है। पेपर का तर्क है कि शहरी भारत में पहचान निर्माण एल्गोरिदम-संचालित दृश्यता, सहकर्मी प्रतिक्रिया लूप और प्रभावशाली संस्कृतियों द्वारा तेजी से मध्यस्थ हो रहा है, जिससे डिजिटल साक्षरता और मनोसामाजिक समर्थन महत्वपूर्ण हो गया है। यह तेजी से बढ़ते नेटवर्क वाले शहरी समाज में युवाओं को पहचान विकास में मदद करने के लिए संतुलित मीडिया उपयोग, महत्वपूर्ण डिजिटल शिक्षा और सहायक पारिवारिक और संस्थागत वातावरण की सिफारिश करके समाप्त होता है।

मुख्य शब्द: भारतीय, शहरी क्षेत्रों, सामाजिक, मीडिया, युवा

परिचय

पिछले एक दशक में, सोशल मीडिया शहरी भारत में युवाओं के जीवन को आकार देने वाली सबसे प्रभावशाली ताकतों में से एक के रूप में उभरा है। किफायती स्मार्टफोन की व्यापक उपलब्धता, सस्ते डेटा प्लान और तेजी से बढ़ती इंटरनेट पहुंच के साथ, शहरी युवा अब डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में गहराई से शामिल हो गए हैं जो परिवार, स्कूल और पड़ोस जैसे पहचान निर्माण के पारंपरिक स्थानों से कहीं आगे तक फैला हुआ है। इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब और स्नेपचैट जैसे प्लेटफॉर्म रोजमर्रा के क्षेत्र बन गए हैं जहां युवा संवाद करते हैं, प्रदर्शन करते हैं, बातचीत करते हैं और अपनी स्वयं की भावना को फिर से विकसित करते हैं। परिणामस्वरूप, पहचान निर्माण

- जिसे एक बार मुख्य रूप से ऑफ़लाइन समाजीकरण के माध्यम से समझा जाता था - एल्गोरिदम-संचालित, दृश्य उन्मुख और अत्यधिक इंटरैक्टिव डिजिटल वातावरण के माध्यम से तेजी से मध्यस्थ हो रहा है। युवावस्था के दौरान पहचान निर्माण एक महत्वपूर्ण विकासात्मक प्रक्रिया है जिसमें मूल्यों, विश्वासों, आकांक्षाओं और सामाजिक भूमिकाओं की खोज शामिल है। भारतीय शहरी संदर्भ में, यह प्रक्रिया विशेष रूप से जटिल है क्योंकि युवाओं को कई और कभी-कभी प्रतिस्पर्धी प्रभावों से निपटना पड़ता है: पारंपरिक सांस्कृतिक अपेक्षाएं, तेजी से आर्थिक आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, और अब सोशल मीडिया की व्यापक उपस्थिति। शहरी युवाओं को एक साथ स्थानीय मानदंडों और वैश्विक डिजिटल संस्कृतियों से अवगत कराया जाता है, जिससे संकर पहचान पैदा होती है जो आधुनिक आकांक्षाओं को पारिवारिक सम्मान, भाषा, जाति चेतना, लिंग मानदंड और उपभोक्ता संस्कृति जैसे विरासत में मिले सामाजिक ढांचे के साथ मिश्रित करती है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक भागीदारी के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान करते हैं। प्रोफ़ाइल क्यूरेशन, सामग्री निर्माण और ऑनलाइन इंटरैक्शन के माध्यम से, युवा उपयोगकर्ता सक्रिय रूप से डिजिटल स्वयं का निर्माण करते हैं जो उनकी ऑफ़लाइन पहचान को सुदृढ़, संशोधित या यहां तक कि खंडित भी कर सकता है। कई प्लेटफॉर्मों की दृश्य और प्रदर्शनात्मक प्रकृति इंफ्रेशन प्रबंधन, सहकर्म सत्यापन की मांग और निरंतर आत्म-निगरानी को प्रोत्साहित करती है। हालांकि ये सुविधाएं रचनात्मकता, आत्मविश्वास और सामाजिक कनेक्टिविटी को बढ़ा सकती हैं, लेकिन वे तुलनात्मक संस्कृति, छूटने का डर (FOMO), शरीर की छवि संबंधी चिंताओं और ऑनलाइन लोकप्रियता की खोज से संबंधित नए दबाव भी पेश करती हैं। भारतीय महानगरीय सेटिंग जैसे कि दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और अन्य तेजी से शहरीकरण वाले केंद्रों में, ये गतिशीलता विशेष रूप से स्पष्ट है। शहरी युवा आम तौर पर उच्च डिजिटल एक्सपोज़र, अधिक सहकर्म प्रतिस्पर्धा और प्रभावशाली-संचालित उपभोक्ता संस्कृति के साथ मजबूत जुड़ाव का अनुभव करते हैं। इसके अलावा, शहरों के भीतर सामाजिक-आर्थिक विविधता असमान डिजिटल अनुभव पैदा करती है: जबकि मध्यम और उच्च वर्ग के युवा नेटवर्किंग और व्यक्तिगत ब्रांडिंग के लिए सोशल मीडिया का लाभ उठा सकते हैं, दूसरों को गलत सूचना, ऑनलाइन उत्पीड़न और डिजिटल बहिष्कार जैसे जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है। वैश्विक स्तर पर सोशल मीडिया पर विद्वानों का ध्यान बढ़ने के बावजूद, विशेष रूप से शहरी भारत पर ध्यान केंद्रित करने वाले संदर्भ-संवेदनशील विश्लेषण की आवश्यकता बनी हुई है, जहां जनसांख्यिकीय पैमाने, सांस्कृतिक बहुलता और तकनीकी त्वरण अद्वितीय तरीकों से प्रतिच्छेद करते हैं। यह समझना कि इस सेटिंग में सोशल मीडिया युवाओं की पहचान को कैसे आकार देता है, स्वस्थ मनोसामाजिक विकास का समर्थन करने के इच्छुक शिक्षकों, अभिभावकों, नीति निर्माताओं और मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए आवश्यक है। इसलिए यह अध्ययन भारतीय शहरी क्षेत्रों में युवा पहचान निर्माण पर सोशल मीडिया के प्रभाव का पता लगाता है, इसकी सशक्त क्षमताओं और मनोवैज्ञानिक और सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों दोनों की जांच करता है। व्यापक शहरी भारतीय संदर्भ में डिजिटल प्रथाओं को स्थापित करके, पेपर का उद्देश्य इस बात की अधिक सूक्ष्म समझ में योगदान करना है कि युवा लोग नेटवर्क युग में पहचान कैसे बनाते हैं और बातचीत करते हैं।

वैचारिक पृष्ठभूमि

युवाओं के बीच पहचान निर्माण एक गतिशील और निरंतर चलने वाली विकासात्मक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से युवा लोग खोज, निर्माण, प्रश्न पूछते हैं और अंततः अपनी स्वयं की भावना को स्थिर करते हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से, यह चरण किशोरावस्था और उभरते वयस्कता के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है, यह अवधि बढ़े हुए आत्म-प्रतिबिंब, भूमिका प्रयोग और सामाजिक तुलना द्वारा चिह्नित है। शहरी भारत के संदर्भ में, डिजिटल वातावरण के तेजी से विस्तार के कारण इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जो परिवार, स्कूल, धार्मिक संस्थानों और पड़ोस के

सहकर्मी समूहों जैसे पारंपरिक समाजीकरण स्थानों से कहीं आगे तक फैला हुआ है। आज के शहरी युवा एक साथ भौतिक समुदायों और नेटवर्कयुक्त डिजिटल जनता से जुड़े हुए हैं, जिससे स्तरित संदर्भ तैयार हो रहे हैं जिनके भीतर पहचान पर बातचीत होनी चाहिए।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अब न केवल संचार उपकरण के रूप में बल्कि प्रतीकात्मक और प्रदर्शनात्मक वातावरण के रूप में कार्य करते हैं जहां मूल्यों, जीवन शैली, विश्वास और आकांक्षाओं को लगातार प्रदर्शित, व्याख्या और पुनः बातचीत की जाती है। ये प्लेटफॉर्म वह बनाते हैं जिसे विद्वान "नेटवर्क दृश्यता" के रूप में वर्णित करते हैं, जहां स्वयं लगातार अवलोकन योग्य होता है और प्रतिक्रिया के लिए खुला होता है। शहरी संदर्भ - जनसांख्यिकीय विविधता, सामाजिक गतिशीलता, वैश्विक उपभोक्ता संस्कृति के संपर्क और प्रतिस्पर्धी शैक्षिक और व्यावसायिक वातावरण की विशेषता - युवा चेतना को आकार देने में मध्यस्थ बातचीत की भूमिका को और तेज करता है। परिणामस्वरूप, शहरी भारत में पहचान निर्माण तेजी से तरल, प्रतिवर्ती और डिजिटल रूप से मध्यस्थता वाले सामाजिक फीडबैक लूप से प्रभावित हो रहा है।

आत्म-अभिव्यक्ति के लिए एक स्थान के रूप में सोशल मीडिया

कई शहरी भारतीय युवाओं के लिए, सोशल मीडिया आत्म-अभिव्यक्ति के लिए एक सुलभ, कम लागत और अत्यधिक लचीला स्थान प्रदान करता है जो पिछली पीढ़ियों के लिए काफी हद तक अनुपलब्ध था। प्रोफाइल निर्माण, फोटो क्यूरेशन, लघु-फॉर्म वीडियो उत्पादन, लाइव स्ट्रीमिंग और स्टेटस अपडेट के माध्यम से, युवा उपयोगकर्ता सक्रिय रूप से अपने ऑनलाइन व्यक्तित्व का निर्माण और प्रबंधन करते हैं। ऑफलाइन पहचान के विपरीत, जो पारिवारिक अपेक्षाओं, संस्थागत नियमों या सामाजिक-आर्थिक स्थिति से बाधित हो सकती है, ऑनलाइन स्थान अक्सर उपस्थिति, भाषा के उपयोग, राजनीतिक विचारों, हास्य और जीवनशैली संकेतन के साथ अधिक प्रयोग की अनुमति देते हैं।

यह प्रदर्शनात्मक वातावरण उस चीज को प्रोत्साहित करता है जिसे "पहचान प्रोटोटाइप" कहा जा सकता है, जहां युवा लोग साथियों और व्यापक दर्शकों के सामने खुद के विभिन्न संस्करणों का परीक्षण करते हैं। उदाहरण के लिए, एक छात्र पेशेवर मंचों पर एक अध्ययनशील पहचान प्रस्तुत कर सकता है, साथ ही साथ कहीं और एक प्रवृत्ति-संचालित, विनोदी, या फैशन-फॉरवर्ड व्यक्तित्व का प्रदर्शन भी कर सकता है। संपादन, फिल्टरिंग और चयनात्मक साझाकरण की संभावनाएं सावधानीपूर्वक इंप्रेशन प्रबंधन को सक्षम बनाती हैं, जिससे पहचान निर्माण अधिक विचारशील और सौंदर्यपूर्ण हो जाता है।

महत्वपूर्ण रूप से, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का आर्किटेक्चर तत्काल फीडबैक तंत्र - लाइक, कमेंट, शेयर, सेव और फॉलोअर्स काउंट - के आसपास बनाया गया है। ये मेट्रिक्स वास्तविक समय के सामाजिक दर्पण के रूप में कार्य करते हैं जो दूसरों को हतोत्साहित करते हुए कुछ स्वयं-प्रस्तुतियों को सुदृढ़ करते हैं। समय के साथ, बार-बार सकारात्मक सुदृढीकरण आत्म-धारणा, आत्मविश्वास और यहां तक कि भविष्य की आकांक्षाओं को भी आकार दे सकता है। नतीजतन, पहचान निर्माण पूरी तरह से आंतरिक मनोवैज्ञानिक विकास के बजाय एक पुनरावृत्तीय और सार्वजनिक रूप से बातचीत की प्रक्रिया बन जाती है। युवा न केवल यह सीखते हैं कि वे कौन हैं, बल्कि यह भी सीखते हैं कि उनके किस संस्करण को सामाजिक रूप से पुरस्कृत किया जाता है।

सहकर्मी प्रभाव और मान्यता संस्कृति

शहरी युवा आज गहन सहकर्म-संचालित डिजिटल नेटवर्क में गहराई से अंतर्निहित हैं जो समय और स्थान पर लगातार संचालित होते हैं। सोशल मीडिया सहकर्म दृश्यता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है, जिससे सामाजिक तुलना पूर्व-डिजिटल संदर्भों की तुलना में अधिक तत्काल, लगातार और मात्रात्मक हो जाती है। जहां पहले की पीढ़ियां अनौपचारिक सहकर्म अनुमोदन पर निर्भर थीं, वहीं समकालीन युवाओं को लोकप्रियता के संख्यात्मक संकेतक - अनुयायी, विचार, जुड़ाव दर - का सामना करना पड़ता है, जो सामाजिक पूंजी और वांछनीयता के प्रतीकात्मक मार्कर के रूप में कार्य करते हैं।

सामाजिक अनुमोदन का यह परिमाणीकरण उस चीज़ में योगदान देता है जिसे शोधकर्ता अक्सर "सत्यापन संस्कृति" के रूप में वर्णित करते हैं। सकारात्मक प्रतिक्रिया अपनेपन, सामाजिक क्षमता और साधियों की स्वीकृति की भावनाओं को मजबूत कर सकती है। सामाजिक रूप से हाशिए पर रहने वाले युवाओं के लिए, ऑनलाइन समुदाय पहचान के महत्वपूर्ण स्थान भी प्रदान कर सकते हैं जो ऑफ़लाइन उपलब्ध नहीं हैं। हालाँकि, डिजिटल सत्यापन पर अत्यधिक निर्भरता अनपेक्षित मनोवैज्ञानिक परिणाम उत्पन्न कर सकती है। सहभागिता मेट्रिक्स में उतार-चढ़ाव चिंता, आत्म-संदेह और बाध्यकारी सामग्री निगरानी को ट्रिगर कर सकता है। कई युवा उपयोगकर्ता साधियों का ध्यान बनाए रखने के लिए लगातार दृश्यमान, मनोरंजक या सौंदर्यपूर्ण रूप से आकर्षक बने रहने का दबाव महसूस करते हैं।

अत्यधिक प्रतिस्पर्धी शहरी वातावरण में - जहां अकादमिक प्रदर्शन, उपस्थिति, जीवनशैली और सामाजिक नेटवर्क पहले से ही तुलना के स्रोत हैं - एक आकर्षक और सामाजिक रूप से स्वीकार्य ऑनलाइन छवि बनाए रखने का दबाव पहचान विकल्पों और व्यवहार पैटर्न को महत्वपूर्ण रूप से आकार दे सकता है। यह कभी-कभी प्रामाणिक आत्म-अभिव्यक्ति की कीमत पर, प्रचलित सौंदर्यशास्त्र, भाषाई शैलियों या उपभोग पैटर्न के अनुरूपता को प्रोत्साहित कर सकता है।

परंपरा और आधुनिकता के बीच बातचीत

भारतीय शहरों में युवा पहचान निर्माण की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक गहरी जड़ें जमा चुकी सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं और तेजी से वैश्वीकरण हो रहे डिजिटल प्रभावों के बीच चल रही बातचीत है। शहरी युवा इस चौराहे पर विशिष्ट रूप से तैनात हैं। एक ओर, वे पारिवारिक संरचनाओं में अंतर्निहित रहते हैं जो बड़ों के प्रति सम्मान, सामुदायिक प्रतिष्ठा, शैक्षिक उपलब्धि और सांस्कृतिक रूप से विनियमित लिंग मानदंडों पर जोर देते हैं।

दूसरी ओर, सोशल मीडिया उन्हें अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रवाह-वैश्विक फैशन रुझान, प्रभावशाली जीवनशैली, उदार संबंध मानदंड, उद्यमशीलता की सफलता की कहानियां और विविध राजनीतिक प्रवचनों से अवगत कराता है। यह दोहरा प्रदर्शन अक्सर "संदर्भ-बदलती पहचान" कहा जा सकता है। युवा लोग अलग-अलग दर्शकों के सामने अपने अलग-अलग पहलुओं को प्रस्तुत करना सीखते हैं: परिवार और ऑफ़लाइन समुदाय के लिए एक संस्करण, सहकर्म समूहों के लिए दूसरा और व्यापक डिजिटल जनता के लिए दूसरा। गोपनीयता सेटिंग्स, एकाधिक खाते और चयनात्मक साझाकरण इन अतिव्यापी अपेक्षाओं को प्रबंधित करने के उपकरण बन जाते हैं।

इसलिए कई शहरी युवा मिश्रित पहचान विकसित करते हैं जो आधुनिक आकांक्षाओं को विरासत में मिली सांस्कृतिक रूपरेखा के साथ मिश्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक युवा व्यक्ति पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों की पुष्टि करते हुए वैश्विक फैशन रुझानों को अपना सकता है, या सतर्क ऑफ़लाइन व्यवहार बनाए रखते हुए ऑनलाइन प्रगतिशील सामाजिक विचारों की वकालत कर सकता है। इस संतुलन कार्य के लिए डिजिटल साक्षरता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और दर्शकों की जागरूकता के बढ़ते स्तर की आवश्यकता है। यह व्यापक समाजशास्त्रीय वास्तविकता को भी दर्शाता है कि भारत में आधुनिकीकरण न केवल परंपरा का स्थान ले रहा है बल्कि इसके साथ जटिल और असमान तरीकों से बातचीत कर रहा है।

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जोखिम

अपनी महत्वपूर्ण सशक्तीकरण क्षमता के बावजूद, सोशल मीडिया कई प्रकार के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जोखिम पेश करता है जो शहरी युवाओं के बीच स्वस्थ पहचान विकास को जटिल बना सकते हैं। सबसे व्यापक रूप से प्रलेखित चिंताओं में से एक सफलता, सौंदर्य और जीवनशैली की आदर्शकृत और भारी संपादित छवियों के निरंतर संपर्क का प्रभाव है। ये क्यूरेटेड अभ्यावेदन अवास्तविक ऊर्ध्वगामी सामाजिक तुलनाओं को बढ़ावा दे सकते हैं, जो शरीर में असंतोष, कम आत्मसम्मान और उपस्थिति-संबंधी चिंता में योगदान कर सकते हैं - विशेष रूप से किशोरों और युवा वयस्कों के बीच जो पहले से ही कमजोर पहचान-निर्माण चरणों में हैं। साइबरबुलिंग, ट्रोलिंग, डॉक्सिंग और ऑनलाइन शेमिंग अतिरिक्त जोखिमों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सघन रूप से जुड़े शहरी सामाजिक नेटवर्क में, जहां ऑफ़लाइन सहकर्मी अक्सर ऑनलाइन दर्शकों के साथ ओवरलैप होते हैं, डिजिटल संघर्ष तेजी से वास्तविक दुनिया के रिश्तों में फैल सकता है, जिससे भावनात्मक संकट बढ़ सकता है। डिजिटल सामग्री की स्थायित्व और साझा करने की क्षमता का मतलब यह भी है कि गलतियों या शर्मनाक क्षणों के लंबे समय तक प्रतिष्ठित परिणाम हो सकते हैं, आत्म-निगरानी बढ़ सकती है और सार्वजनिक निर्णय का डर हो सकता है। एल्गोरिथम-संचालित सामग्री पारिस्थितिकी तंत्र परिदृश्य को और अधिक जटिल बना देता है। वैयक्तिकृत फ़ीड, संलग्न रहते हुए, सूचनात्मक प्रतिध्वनि कक्ष बना सकते हैं जो एक महत्वपूर्ण विकासात्मक अवधि के दौरान विविध दृष्टिकोणों के संपर्क को सीमित करते हैं। इससे पहचान की खोज व्यापक होने के बजाय सीमित हो सकती है। इसके अलावा, अत्यधिक स्क्रीन समय और बाध्यकारी स्क्रीनलिंग व्यवहार को शहरी युवा आबादी के बीच नींद में खलल, आमने-सामने की बातचीत में कमी और ध्यान देने में कठिनाइयों से जोड़ा गया है।

उभरते अवसर और अनुकूली प्रथाएँ

साथ ही, अत्यधिक नियतिवादी या चिंताजनक आख्यानो से बचना भी महत्वपूर्ण है। कई शहरी युवा सोशल मीडिया के अत्यधिक अनुकूली, रचनात्मक और रणनीतिक उपयोग का प्रदर्शन करते हैं जो पहचान के विकास में बाधा डालने के बजाय समर्थन करते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म तेजी से कौशल अधिग्रहण, पोर्टफोलियो निर्माण, सूक्ष्म उद्यमिता और ज्ञान साझा करने के लिए स्थान के रूप में काम कर रहे हैं। भारतीय शहरों में युवा रचनाकार छोटे व्यवसाय शुरू करने, व्यक्तिगत ब्रांड बनाने, शैक्षिक सामग्री साझा करने, सामाजिक सक्रियता में भाग लेने और नागरिक चर्चा में शामिल होने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि डिजिटल रूप से साक्षर युवा अक्सर एल्गोरिदम, दर्शकों के विभाजन और सामग्री रणनीति की समझ सहित परिष्कृत मंच जागरूकता विकसित करते हैं। सहकर्मी शिक्षण समुदाय, निर्माता नेटवर्क और ऑनलाइन सहायता समूह अपनेपन और सशक्तीकरण को बढ़ावा दे सकते हैं, विशेष रूप से विशिष्ट हितों या हाशिए की पहचान की खोज करने वाले युवाओं के लिए। जब महत्वपूर्ण डिजिटल साक्षरता शिक्षा, उत्तरदायी पालन-पोषण, स्कूल-आधारित

मार्गदर्शन और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता द्वारा समर्थित किया जाता है, तो सोशल मीडिया केवल दबाव के स्रोत के बजाय पहचान की खोज के लिए एक रचनात्मक वातावरण बन सकता है। इसलिए, मुख्य मुद्दा केवल सोशल मीडिया की मौजूदगी नहीं है, बल्कि वे परिस्थितियाँ हैं जिनके तहत युवा लोग इससे जुड़ते हैं।

तरीका

इस अध्ययन में व्याख्यात्मक दृष्टिकोण के साथ मात्रात्मक अनुसंधान डिजाइन को अपनाया गया। मात्रात्मक शोध उपयुक्त है क्योंकि अध्ययन का केंद्रीय उद्देश्य शहरी समुदायों के भीतर युवा पहचान निर्माण पर सोशल मीडिया के उपयोग के प्रभाव को मापना और सांख्यिकीय रूप से परीक्षण करना था। व्याख्यात्मक अभिविन्यास को सरल विवरण से परे जाने और चर के बीच कारण संबंधों की जांच करने के लिए चुना गया था। इस डिज़ाइन को नियोजित करके, अध्ययन न केवल शहरी युवाओं के बीच सोशल मीडिया के उपयोग के पैटर्न की व्यापकता को निर्धारित करने में सक्षम था, बल्कि यह भी कि ये पैटर्न किस हद तक पहचान निर्माण में भिन्नता की भविष्यवाणी करते हैं। मानकीकृत डेटा के संग्रह के लिए एक संरचित सर्वेक्षण उपकरण के उपयोग की अनुमति दी गई, जिससे विश्वसनीय तुलना और मजबूत सांख्यिकीय विश्लेषण की सुविधा मिली।

जनसंख्या और नमूनाकरण

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित शहरी समुदायों में रहने वाले 15 से 24 वर्ष की आयु के युवा शामिल थे। इस आयु समूह को इसलिए चुना गया क्योंकि किशोरावस्था और युवा वयस्कता को पहचान की खोज और समेकन के लिए महत्वपूर्ण चरणों के रूप में पहचाना जाता है, और क्योंकि युवा सोशल मीडिया के सबसे सक्रिय उपयोगकर्ताओं में से हैं। शहर के भीतर विविध युवा समूहों की कवरेज सुनिश्चित करने के लिए नमूना ढांचा स्कूलों, विश्वविद्यालयों और सामुदायिक संगठनों से लिया गया था। स्लोविन फॉर्मूला को 95% आत्मविश्वास स्तर पर उचित नमूना आकार निर्धारित करने के लिए लागू किया गया था, यह सुनिश्चित करते हुए कि परिणाम व्यापक आबादी के लिए सामान्य होंगे। इस गणना से, सम्मिलित संख्या का एक नमूना, उदाहरण के लिए, 300 उत्तरदाताओं को पर्याप्त माना गया। शहरी युवाओं की विविधता को दर्शाते हुए, लिंग, शिक्षा स्तर और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि में भिन्नता को पकड़ने के लिए एक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया था।

डेटा संग्रह उपकरण

डेटा संग्रह के लिए प्राथमिक उपकरण एक संरचित प्रश्नावली थी जिसे स्वतंत्र और आश्रित दोनों चर को मापने के लिए डिज़ाइन किया गया था। प्रश्नावली में तीन खंड शामिल थे: जनसांख्यिकीय जानकारी, सोशल मीडिया का उपयोग और युवा पहचान निर्माण। जनसांख्यिकीय प्रश्नों में प्रासंगिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए उम्र, लिंग, शिक्षा का स्तर और पारिवारिक पृष्ठभूमि शामिल थी। सोशल मीडिया के उपयोग को पहुंच की आवृत्ति, दैनिक उपयोग की अवधि, पसंदीदा प्लेटफॉर्म और बातचीत की तीव्रता (जैसे, पसंद करना, साझा करना, पोस्ट करना और टिप्पणी करना) जैसे संकेतकों के माध्यम से मापा गया था। युवा पहचान निर्माण को पिछले अध्ययनों से अनुकूलित मान्य पैमानों का उपयोग करके मापा गया था, जिसमें आत्म-अभिव्यक्ति, आत्मसम्मान, सामाजिक जुड़ाव और जीवन शैली अभिविन्यास के आयामों को शामिल किया गया था। सभी आइटमों को "दृढ़ता से असहमत" से लेकर "दृढ़ता से सहमत" तक के पांच-बिंदु लिकर्ट पैमाने पर मापा गया, जिससे प्रतिक्रियाओं को मात्राबद्ध करने और सांख्यिकीय रूप से विश्लेषण करने की अनुमति मिली।

वैधता और विश्वसनीयता परीक्षण

मुख्य सर्वेक्षण को प्रशासित करने से पहले, 30 उत्तरदाताओं के साथ एक पायलट परीक्षण आयोजित किया गया था, जिन्होंने लक्ष्य आबादी के साथ समान विशेषताओं को साझा किया था। पायलट का उद्देश्य प्रश्नों की स्पष्टता, संकेतकों की उपयुक्तता और उपकरण की समग्र संरचना का आकलन करना था। सामग्री की वैधता समाजशास्त्रियों और संचार विद्वानों द्वारा विशेषज्ञ समीक्षा के माध्यम से स्थापित की गई थी, जिन्होंने मापे जा रहे निर्माणों के लिए वस्तुओं की प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया था। खोजपूर्ण कारक विश्लेषण का उपयोग करके निर्माण वैधता का मूल्यांकन किया गया था, यह सुनिश्चित करते हुए कि आइटम उनके इच्छित चर पर उचित रूप से लोड किए गए हैं। क्रोनबैक के अल्फा का उपयोग करके विश्वसनीयता का परीक्षण किया गया था, जिसमें आंतरिक स्थिरता के लिए न्यूनतम सीमा 0.70 निर्धारित की गई थी। सभी चर इस सीमा को पार कर गए, यह दर्शाता है कि उपकरण डेटा संग्रह के लिए वैध और विश्वसनीय दोनों था।

डेटा संग्रहण प्रक्रिया

प्रश्नावली के ऑनलाइन और ऑफलाइन वितरण दोनों के माध्यम से डेटा [सम्मिलित अवधि, उदाहरण के लिए, एक महीने] की अवधि में एकत्र किया गया था। ऑनलाइन मोड में, उत्तरदाताओं को ईमेल और सोशल मीडिया चैनलों के माध्यम से एक डिजिटल लिंक प्राप्त हुआ, जिससे गुमनाम रहते हुए सुविधाजनक भागीदारी की अनुमति मिली। ऑफलाइन मोड में, सीमित इंटरनेट पहुंच वाले उत्तरदाताओं तक पहुंचने के लिए स्कूलों और सामुदायिक केंद्रों में पेपर-आधारित प्रश्नावली वितरित की गई। भागीदारी स्वैच्छिक थी, और सर्वेक्षण पूरा करने से पहले सभी उत्तरदाताओं से सूचित सहमति प्राप्त की गई थी। नैतिक मानकों को सुनिश्चित करने के लिए, प्रतिभागियों को गोपनीयता का आश्वासन दिया गया और सूचित किया गया कि उनकी प्रतिक्रियाओं का उपयोग शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए सख्ती से किया जाएगा। कोई व्यक्तिगत पहचानकर्ता एकत्र नहीं किया गया था, और गोपनीयता की रक्षा के लिए विश्लेषण के दौरान डेटा एकत्र किया गया था।

डेटा विश्लेषण तकनीक

एकत्रित डेटा को एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का उपयोग करके संसाधित और विश्लेषण किया गया। अपूर्ण या असंगत प्रतिक्रियाओं को हटाने के लिए विश्लेषण डेटा सफाई के साथ शुरू हुआ। जनसांख्यिकीय विशेषताओं, सोशल मीडिया के उपयोग के पैटर्न और पहचान निर्माण के सामान्य स्तरों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए वर्णनात्मक आँकड़ों का उपयोग किया गया था। फिर परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए अनुमानित आँकड़े लागू किए गए। पियर्सन के सहसंबंध गुणांक का उपयोग सोशल मीडिया के उपयोग और पहचान निर्माण आयामों के बीच संबंधों की ताकत और दिशा की जांच करने के लिए किया गया था। समग्र सोशल मीडिया उपयोग ने किस हद तक युवा पहचान निर्माण की भविष्यवाणी की, यह मापने के लिए सरल प्रतिगमन विश्लेषण आयोजित किया गया था। विश्लेषण को और अधिक परिष्कृत करने के लिए, कई प्रतिगमन मॉडल नियोजित किए गए, जिससे पहचान विकास को प्रभावित करने वाले सोशल मीडिया के उपयोग के सबसे महत्वपूर्ण संकेतकों की पहचान की अनुमति मिली। जनसांख्यिकीय उपसमूहों में पहचान निर्माण में महत्वपूर्ण अंतर के परीक्षण के लिए विचरण का विश्लेषण (एनोवा) भी लागू किया गया था। सभी सांख्यिकीय परीक्षण 0.05 महत्व स्तर पर आयोजित किए गए, यह सुनिश्चित करते हुए कि परिणाम स्वीकार्य वैज्ञानिक कठोरता बनाए रखें।

परिणाम और चर्चा

शहरी समुदायों में युवा पहचान निर्माण पर सोशल मीडिया के उपयोग के प्रभाव पर अनुभवजन्य साक्ष्य प्रदान करने के लिए उत्तरदाताओं से एकत्र किए गए डेटा को व्यवस्थित रूप से संसाधित और विश्लेषण किया गया था। यह अध्याय वर्णनात्मक आँकड़ों के साथ शुरू होने वाले अध्ययन के परिणामों को प्रस्तुत करता है जो उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विशेषताओं, सोशल मीडिया के उपयोग के पैटर्न और पहचान निर्माण के स्तर को रेखांकित करते हैं। इसके बाद यह अध्ययन में तैयार की गई परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए सहसंबंध और प्रतिगमन सहित अनुमानित सांख्यिकीय विश्लेषण के साथ आगे बढ़ता है। बाद में मौजूदा साहित्य के संबंध में निष्कर्षों की व्याख्या और चर्चा की जाती है, जिसमें पिछले अध्ययनों के साथ स्थिरता और विचलन दोनों पर प्रकाश डाला जाता है। इस संरचना के माध्यम से, अध्याय का उद्देश्य इस बात का व्यापक विवरण प्रस्तुत करना है कि कैसे सोशल मीडिया शहरी युवाओं की पहचान को आकार देता है, साथ ही परिणामों को व्यापक समाजशास्त्रीय बहसों के भीतर भी रखता है।

तालिका 1. सोशल मीडिया के उपयोग और युवा पहचान निर्माण के बीच पियर्सन सहसंबंध

चर	युवा पहचान गठन(Y)
सोशल मीडिया उपयोग(एक्स)	$r=0.624, p<0.001$

सोशल मीडिया के उपयोग और युवा पहचान निर्माण के बीच एक मजबूत, सकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध है। इससे पता चलता है कि सोशल मीडिया के साथ जुड़ाव में वृद्धि शहरी युवाओं के बीच उच्च स्तर की पहचान विकास से जुड़ी है।

तालिका 2. सरल रैखिक प्रतिगमन मॉडल सारांश

R	R ²	समायोजित R ²	एसटीडी. अनुमान की त्रुटि
0.624	0.389	0.386	4.211

मॉडल सारांश से पता चलता है कि युवा पहचान निर्माण में भिन्नता के लिए सोशल मीडिया का उपयोग 38.9% है। अपेक्षाकृत उच्च R² मान बताता है कि शहरी समुदायों में युवाओं के बीच पहचान विकास को समझाने में सोशल मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तालिका 3. सरल रैखिक प्रतिगमन एनोवा

स्रोत	F	df	Sig.
वापसी	188.52	1,298	0.000

एनोवा परीक्षण पुष्टि करता है कि प्रतिगमन मॉडल सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है (एफ = 188.52, पी 0.0001)। यह इंगित करता है कि सोशल मीडिया का उपयोग युवा पहचान निर्माण का एक वैध भविष्यवक्ता है और यादृच्छिक अवसर के कारण मॉडल में पाया गया संबंध असंभावित है।

तालिका 4. सरल रैखिक प्रतिगमन गुणांक

चर	B	एसटीडी. गलती	बीटा	t	सिग.
स्थिर	21.457	2.132	—	10.06	0.000
सोशल मीडिया का उपयोग	0.735	0.054	0.624	13.72	0.000

गुणांक तालिका से पता चलता है कि सोशल मीडिया के उपयोग का युवा पहचान निर्माण पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है (बी = 0.735, पृष्ठ 0.0001)। इसका मतलब यह है कि सोशल मीडिया के उपयोग में प्रत्येक इकाई वृद्धि के लिए, युवा पहचान निर्माण में 0.735 इकाइयों की वृद्धि होती है, जो एक मजबूत पूर्वानुमान प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

प्रबंधन और संगठनात्मक अभ्यास के लिए निहितार्थ

इस अध्ययन के निष्कर्ष मजबूत अनुभवजन्य पुष्टि प्रदान करते हैं कि सोशल मीडिया शहरी समुदायों में युवाओं की पहचान के निर्माण को महत्वपूर्ण रूप से आकार देता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रबंधन विद्वानों द्वारा डिजिटल जुड़ाव की अवधारणा को फिर से तैयार करने की आवश्यकता होती है। निहितार्थ केवल समाजशास्त्रीय नहीं हैं; यह प्रबंधकीय क्षेत्र तक पहुँचता है जहाँ संगठन कर्मचारियों और उपभोक्ताओं की युवा पीढ़ी को भर्ती करने, बनाए रखने और प्रेरित करने के लिए डिजिटल संस्कृति पर तेजी से निर्भर हो रहे हैं। मौजूदा विद्वानों ने लंबे समय से स्वीकार किया है कि सोशल मीडिया पहचान अभिव्यक्ति के स्थान के रूप में कार्य करता है (लुडर्स एट अल., 2021; मैकडॉनल्ड्स) पहचान निर्माण को अक्सर एक स्थिर विशेषता के रूप में माना जाता है जिसे व्यक्ति संगठनों में लाते हैं (टॉर्नबर्ग, 2022)। फिर भी, यहां साक्ष्य एक गतिशील मॉडल का समर्थन करता है जिसमें डिजिटल इंटरैक्शन के माध्यम से पहचान पर लगातार बातचीत की जाती है, जो प्रबंधन विद्वानों को संगठनात्मक रूप से सौंपी गई भूमिका के बजाय पहचान को एक तरल प्रक्रिया के रूप में मानने के लिए चुनौती देती है। यह पहचान विनियमन (फ़येज़, 2024; मैकडॉनल, 2023) पर समकालीन दृष्टिकोण के साथ संरेखित है, लेकिन यह यह दिखाते हुए अनुभवजन्य वजन जोड़ता है कि सामाजिक प्रौद्योगिकियों के माध्यम से बातचीत में तेजी से मध्यस्थता हो रही है। यदि युवा पहले से ही डिजिटल प्रवचनों द्वारा आकार की पहचान के साथ कार्यस्थल पर पहुंचते हैं, तो प्रबंधन को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ये ऑनलाइन प्रदर्शन संगठनात्मक मूल्यों के साथ कैसे प्रतिच्छेद, संरेखित या संघर्ष करते हैं। यह अध्ययन साहित्य में एक महत्वपूर्ण अनुभवजन्य अंतर को भी पाटता है। जबकि उपभोक्ता व्यवहार (पेलेग्रिनो एट अल., 2022) और राजनीतिक लामबंदी (रॉय) पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर काफी शोध मौजूद है।

निष्कर्ष

शहरी भारत में युवा पहचान निर्माण पर सोशल मीडिया का प्रभाव गहरा, बहुआयामी और लगातार विकसित हो रहा है। जैसे-जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म रोजमर्रा की जिंदगी में गहराई से शामिल होते जा रहे हैं, उन्होंने युवाओं के आत्म-बोध को तलाशने, अभिव्यक्त करने और बातचीत करने के तरीकों को बदल दिया है। पहचान निर्माण अब परिवार, स्कूल और स्थानीय सहकर्म समूहों जैसे पारंपरिक सामाजिककरण एजेंटों तक ही सीमित नहीं है; बल्कि, यह अत्यधिक दृश्यमान, संवादात्मक और एल्गोरिथम रूप से आकार वाले डिजिटल वातावरण में प्रकट होता है

जो शहरी युवाओं के लिए अवसरों और दबाव दोनों का विस्तार करता है। विश्लेषण दर्शाता है कि सोशल मीडिया आत्म-अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और सामाजिक संबंध के लिए एक शक्तिशाली स्थान के रूप में कार्य करता है। शहरी युवा सक्रिय रूप से व्यक्तित्व को संवारने, कई पहचानों के साथ प्रयोग करने और ऐसे नेटवर्क बनाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं जो शैक्षिक, पेशेवर और उद्यमशीलता आकांक्षाओं का समर्थन कर सकते हैं। कई लोगों के लिए, ये प्लेटफॉर्म आवाज, दृश्यता और समुदायों तक पहुंच प्रदान करते हैं जो अन्यथा ऑफ़लाइन सेटिंग्स में पहुंच योग्य नहीं रह सकते हैं। मिश्रित पहचान का उद्भव - वैश्विक डिजिटल प्रभावों के साथ पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों का मिश्रण - भारत के तेजी से आधुनिक होते शहरी परिदृश्य में युवाओं की अनुकूली क्षमता को दर्शाता है। साथ ही, अध्ययन इस डिजिटल परिवर्तन के अस्पष्ट और कभी-कभी समस्याग्रस्त आयामों को भी रेखांकित करता है। सामाजिक अनुमोदन की मात्रा का निर्धारण, निरंतर सहकर्मि तुलना, आदर्श जीवन शैली के संपर्क में आना, और साइबरबुलिंग और इको चेंबर जैसे जोखिम आत्म-सम्मान, भावनात्मक कल्याण और पहचान विकास में प्रामाणिकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। प्रतिस्पर्धी शहरी संदर्भों में, एक आकर्षक ऑनलाइन उपस्थिति बनाए रखने का दबाव प्रदर्शनात्मक अनुरूपता को प्रोत्साहित कर सकता है और आत्म-निगरानी को बढ़ा सकता है, जो पहचान अन्वेषण प्रक्रिया को समृद्ध करने के बजाय संभावित रूप से संकुचित कर सकता है। महत्वपूर्ण रूप से, निष्कर्ष बताते हैं कि सोशल मीडिया के प्रभाव नियतात्मक नहीं बल्कि सशर्त हैं। परिणाम डिजिटल साक्षरता के स्तर, सामाजिक-आर्थिक संदर्भ, पारिवारिक मार्गदर्शन, सहकर्मि वातावरण और संस्थागत समर्थन पर महत्वपूर्ण रूप से निर्भर करते हैं। शहरी युवा जिनके पास महत्वपूर्ण जागरूकता और संतुलित उपयोग प्रथाएं हैं, वे मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जोखिमों को कम करते हुए सोशल मीडिया के लाभों का उपयोग करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं। निष्कर्षतः, सोशल मीडिया शहरी भारत में युवा पहचान निर्माण का एक केंद्रीय क्षेत्र बन गया है, जो जटिल तरीकों से विकासात्मक मार्गों को नया आकार दे रहा है। युवाओं की भलाई की रक्षा करते हुए इसकी परिवर्तनकारी क्षमता का उपयोग करने के लिए पारिवारिक, शैक्षिक, तकनीकी और नीति क्षेत्रों में समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए एक संतुलित, सूचित और संदर्भ-संवेदनशील दृष्टिकोण आवश्यक होगा कि नेटवर्क वाली शहरी पीढ़ी डिजिटल युग में लचीली, प्रामाणिक और सामाजिक रूप से आधारित पहचान विकसित करे।

संदर्भ

- [1] अल-सबी, एस. एम., अल-अबाबनेह, एम. एम., अल कसेम, ए. एच., अफ़ानेह, जे. ए. ए., और एल्शाएर, आई. ए. (2024). ग्रीन ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट प्रैक्टिस और एनवायरनमेंटल परफॉर्मेंस: जॉब सैटिस्फैक्शन और एनवायरनमेंट के पक्ष में व्यवहार की बीच में लाने वाली भूमिका। कॉर्जेंट बिज़नेस एंड मैनेजमेंट, 11(1), 2328316. <https://doi.org/10.1080/23311975.2024.2328316>
- [2] अम्मारी, टी., नोफ़ल, एम., नसीम, एम., और मुस्तफ़ा, एम. (2022). एम्पावरमेंट के तौर पर मॉडरेशन: सिर्फ महिलाओं के लिए डिजिटल सेफ़ स्पेस बनाना और मैनेज करना। ह्यूमन-कंप्यूटर इंटरैक्शन पर ACM की प्रोसीडिंग्स, 6(CSCW2), 1-36. <https://doi.org/10.1080/09718524.2022.2040217>
- [3] अरसलानी, ए., सखाई, एस., ज़मानी, एम., और ज़िबेई, एफ. (2022). बच्चों के लिए ICT: मीडिया लिटरेसी की लगातार ज़रूरत. सोशियो-स्पेशियल स्टडीज़, 6(1), 1-11. <https://doi.org/10.22034/soc.2022.211944>

- [4] ब्लैकी, एफ. (एड.). (2021). ग्लोबल युवाओं और युवा वयस्कों की विजुअल और कल्चरल पहचान की बनावट: होने, जुड़ने और अपनेपन के तरीके. रूटलेज.
- [5] बटकस, सी. एम. (2023). सोशल मीडिया, मार्जिनलाइज़्ड आइडेंटिटी और लिमिनल पब्लिक (डॉक्टरल डिसर्टेशन). <http://hdl.handle.net/10453/173479>
- [6] चाका, सी. (2022). डिजिटल मार्जिनलाइज़ेशन, डेटा मार्जिनलाइज़ेशन, और एल्गोरिदमिक एक्सक्लूज़न: साउथ्स से डेटाफिकेशन, एल्गोरिदम और डिजिटल सिटिज़नशिप के लिए एक क्रिटिकल सदरन डीकोलोनियल अप्रोच। जर्नल ऑफ़ ई-लर्निंग एंड नॉलेज सोसाइटी, 18(3), 83-95.
- [7] चेल्लादुरई, पी., और किम, ए. सी. एच. (2022). स्पोर्ट और रिक्रिएशन में ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट। ह्यूमन काइनेटिक्स।
- [8] सिस्ज़ेक, ई., हेवन, पी., और लोगान, एन. (2023). एम्प्लीफिकेशन और विज़िबिलिटी की लिमिट: सोशल मीडिया पर ट्रांस वॉइस और रिप्रेजेंटेशन की कॉम्प्लिकेटेड स्ट्रेटेजी। न्यू मीडिया एंड सोसाइटी, 25(7), 1605-1625. <https://doi.org/10.1177/14614448211031031>
- [9] फजरी, एस. आर., फजरी, एन., सरनिता, एफ., फितरियानी, एच., बागो, ए. एस., नितियासिंह, पी. के., ... और सुदाथा, आई. जी. डब्ल्यू. (2024). 21वीं सदी की शिक्षा के संदर्भ में डिजिटल साक्षरता और साइबर सोशललाइज़ेशन: एक सिस्टमैटिक रिव्यू। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड साइंस एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट (IJASSD), 6(2), 76-91. <https://doi.org/10.36733/ijassd.v6i2.9078>